अ· से· पुश्किन
क़िस्सा
मछली
मछुए
का

अ. से. पुश्किन

क़िस्सा मछली मछुए का

रादुगा प्रकाशन · मास्को

नीले-नीले सागर तट पर
घास-फूस की कुटी बना कर,
तैंतीस वर्षों से उसमें ही
बूढ़ा-बुढ़िया रहते थे,
बुढ़िया बैठी सूत कातती
बूढ़ा जल में जाल बिछाता,
एक बार जो जाल बिछाया
वह बस काई लेकर आया,
बार दूसरी जाल बिछाया
वह बस जल-झाड़ी ही लाया,
बार तीसरी जाल बिछाया
मछली एक फांसकर लाया,
किन्तु नहीं साधारण मछली,
ढली हुई सोने में असली।

मानव की भाषा में बोली –
"बाबा, मुझको जल में छोड़ो
बदले में जो चाहो, ले लो,
क्या इच्छा, तुम इतना बोलो।"
बूढ़ा चकित हुआ, घबराया
इतने सालों जाल बिछाया,
मछली मानव जैसे बोले
नहीं कभी भी वह सुन पाया।
छोड़ दिया उसको पानी में
और कहा मीठी वाणी में –
"भला करें भगवान तुम्हारा
तुम नीले सागर में जाओ,
नहीं चाहिये मुझको कुछ भी,
तुम घर जाओ, मौज मनाओ।"

बूढ़ा जब वापस घर आया,
बुढ़िया को सब हाल सुनाया –
"आज जाल में आयी मछली
नहीं आम, सोने की असली,
हम जैसी भाषा में बोली –
'बाबा, मुझको जल में छोड़ो,
बदले में जो चाहो, ले लो
क्या इच्छा तुम इतना बोलो।'
मांगूं कुछ, यह हुआ न साहस
यों ही छोड़ दिया जल में, बस।"
बुढ़िया बूढ़े पर झल्लायी
उसे करारी डांट पिलायी –
"बिल्कुल बुद्धू तुम, उल्लू हो!
कुछ भी नहीं लिया मछली से
नया कठौता ही ले लेते
घिसा हमारा, नहीं देखते।"

कान दबा वह तट पर आया
कुछ बेचैन उसे अब पाया।
मछली को जा वहां पुकारा
वह तो तभी चीर जल-धारा,
आयी पास और यह बोली –
"बाबा क्यों है मुझे बुलाया?"
बूढ़े ने झट शीश झुकाया –
"सुनो बात तुम, जल की रानी
तुम्हें सुनाऊं व्यथा-कहानी,
मेरी बुढ़िया मुझे सताये
उसके कारण चैन न आये,
कहे: कठौता घिसा पुराना
लाओ नया, तभी घर आना।"
दिया उसे मछली ने उत्तर –
"दुखी न हो, बाबा, जाओ घर
पाओ नया कठौता घर पर।"

बूढ़ा वापस घर पर आया
नया कठौता सम्मुख पाया।
बुढ़िया और अधिक झल्लायी
और ज़ोर से डांट पिलायी –
"बिल्कुल बुद्धू तुम, उल्लू हो,
मांगा भी तो यही कठौता
कुछ तो और ले लिया होता।
उल्लू, फिर सागर पर जाओ,
और मछली को शीश नवाओ
तुम अच्छा-सा घर बनवाओ।"

बूढ़ा फिर सागर पर आया
कुछ बेचैन उसे अब पाया,
स्वर्ण मीन को पुनः पुकारा
मछली तभी चीर जल-धारा,
आयी पास और यह पूछा –
"बाबा क्यों है मुझे बुलाया?"
बूढ़े ने झट शीश झुकाया –
"सुनो बात तुम, जल की रानी
तुम्हें सुनाऊं व्यथा-कहानी,
मेरी बुढ़िया मुझे सताये
उसके कारण चैन न आये,
कहती – जाकर शीश नवाओ
जल-रानी की मिन्नत करके
तुम अच्छा-सा घर बनवाओ।"
"दुखी न हो, तुम वापस जाओ
और वहां निर्मित घर पाओ।"
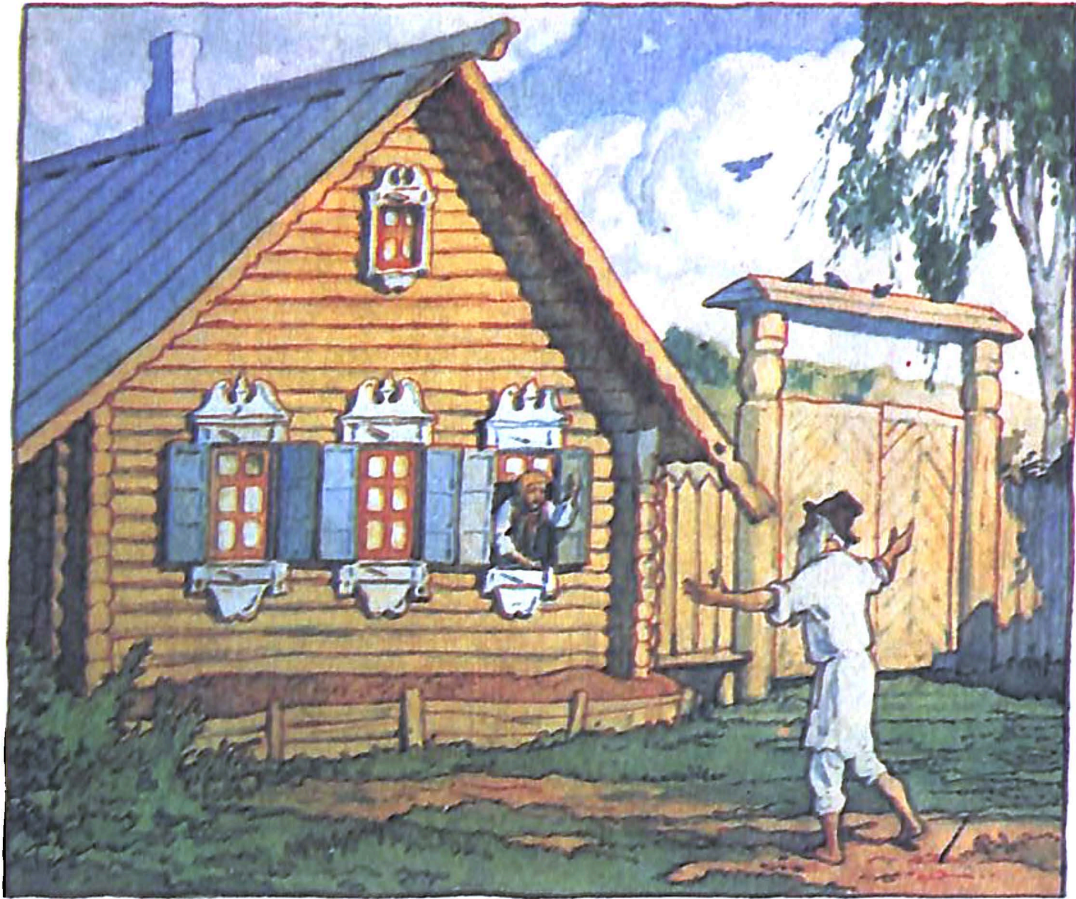
वह कुटिया को वापस आया
नहीं चिह्न भी उसका पाया।
वहां खड़ा था अब बढ़िया घर,
चिमनी जिसकी छत के ऊपर
लकड़ी के दरवाज़े सुन्दर।
बुढ़िया खिड़की में बैठी थी
औ' बूढ़े को कोस रही थी –
"तुम बुद्धू हो, मूर्ख भयंकर
मांगा भी तो केवल यह घर,
जाओ, फिर से वापस जाओ
औ' मछली को शीश नवाओ,
नहीं गंवारू रहना चाहूं
ऊंचे कुल की बनना चाहूं।"

बूढ़ा फिर सागर पर आया
कुछ बेचैन उसे अब पाया,
मछली को फिर वहां पुकारा
वह तो तभी चीर जल-धारा,
आयी पास, और यह पूछा –
"बाबा, क्यों है मुझे बुलाया?"
बूढ़े ने झट शीश झुकाया –
"सुनो बात तुम, जल की रानी
तुम्हें सुनाऊं व्यथा-कहानी,
मेरी बुढ़िया मुझे सताये
उसके कारण चैन न आये,
नहीं गंवारू रहना चाहे
ऊंचे कुल की बनना चाहे।"
बोली मछली – "जी न दुखाओ
उसको ऊंचे घर की पाओ।"

बूढ़ा वापस घर को आया
दृश्य देख, वह तो चकराया,
भवन बड़ा-सा, सम्मुख सुन्दर
बुढ़िया बाहर दरवाज़े पर,
खड़ी हुई, बढ़िया फ़र पहने
तिल्ले की टोपी औ' गहने,
हीरे-मोती चमचम चमकें
स्वर्ण मुंदरियां सुन्दर दमकें,
लाल रंग के बूट सुहायें
नौकर-चाकर दायें-बायें,
बुढ़िया उनको मारे, पीटे
बाल पकड़कर उन्हें घसीटे।
बूढ़ा यों बुढ़िया से बोला –
"नमस्कार, देवी जी, अब तो
जो कुछ चाहा, वह सब पाया
चैन तुम्हारे मन को आया।"
बुढ़िया ने डांटा, ठुकराया,
उसे सईस बना घोड़ों का
तुरत तबेले में भिजवाया।

बीता हफ़्ता, बीत गये दो,
आग-बबूली बुढ़िया ने हो
फिर से बूढ़े को बुलवाया,
उसको यह आदेश सुनाया –
"जा मछली को शीश नवाओ
मेरी यह इच्छा बतलाओ,
बनना चाहूं मैं अब रानी
ताकि कर सकूं मैं मनमानी।"
बूढ़ा डरा और यह बोला –
"क्या दिमाग़ तेरा चल निकला?
तुझे न तौर-तरीक़ा आये
हंसी सभी में तू उड़वाये।"
बुढ़िया अधिक क्रोध में आयी
और बूढ़े को चपत लगायी –
"क्या बकने हो ऐसी जुर्रत?
मुझसे बहस करो, यह हिम्मत?
तुरत चले जाओ सागर पर
वरना ले जायें घसीटकर।"

बूढ़ा फिर सागर पर आया
और विकल अब उसको पाया,
स्वर्ण मीन को पुनः पुकारा
मछली तभी चीर जल-धारा,
आयी पास और यह पूछा –
"बाबा, क्यों है मुझे बुलाया?"
बूढ़े ने झट शीश झुकाया –
"सुनो व्यथा, मेरी जल-रानी
तुम्हें सुनाऊं दर्द-कहानी
बुढ़िया फिर से शोर मचाये
नहीं इस तरह रहना चाहे,
इच्छुक है बनने को रानी
ताकि कर सके वह मनमानी।"
स्वर्ण मीन तब उससे बोली –
"दुखी न हो, बाबा, घर जाओ
तुम बुढ़िया को रानी पाओ!"

बूढ़ा फिर वापस घर आया
सम्मुख महल देख चकराया,
अब बुढ़िया के ठाठ बड़े थे
उसके तेवर खूब चढ़े थे,
थे कुलीन सेवा में हाज़िर
होते थे सामन्त निछावर,
मदिरा से प्याले भरते थे
वे प्रणाम झुक-झुक करते थे,
बुढ़िया केक, मिठाई खाये
और सुरा के जाम चढ़ाये,
कंधों पर रख बल्लम, फरसे
सब दिशि पहरेदार खड़े थे।
बूढ़ा ठाठ देख, घबराया
झट बुढ़िया को शीश नवाया,
बोला – "अब तो खुश रानी जी,
जो कुछ चाहा, वह सब पाया
अब तो चैन आपको आया?"

उसकी ओर न तनिक निहारा
इसे भगाओ, किया इशारा,
झपटे लोग इशारा पाकर
गर्दन पकड़ निकाला बाहर,
सन्तरियों ने डांट पिलायी
बस, गर्दन ही नहीं उड़ायी,
सब दरबारी हंसी उड़ायें
ऊंचे-ऊंचे यह चिल्लायें –
"भूल गये तुम कौन, कहां हो?
आये तुम किसलिये यहां हो?
ऐसी ग़लती कभी न करना
बहुत बुरी बीतेगी वरना।"

बीता हफ़्ता, बीत गये दो,
सनक नयी आयी बुढ़िया को,
हरकारे सब दिशि दौड़ाये
ढूंढ़, पकड़ बूढ़े को लाये,
बुढ़िया यों बोली बूढ़े से –
"फिर से सागर तट पर जाओ
औ' मछली को शीश नवाओ,
नही चाहती रहना रानी,
अब यह मैंने मन में ठानी
करूं सागरों में मनमानी,
जल में हो मेरा सिंहासन
सभी सागरों पर हो शासन,
स्वर्ण मीन ख़ुद हुक्म बजाये
जो भी मांगूं लेकर आये।"

हुई न हिम्मत कुछ समझाये
वह बुढ़िया को अक़्ल सिखाये,
लौटा वह नीले सागर पर
सागर में तूफ़ान भयंकर,
लहरें ग़ुस्से से बल खायें
उछलें, कूदें, शोर मचायें,
स्वर्ण मीन को पुनः पुकारा
मछली चीर तभी जल-धारा,
आयी पास, और यह पूछा –
"बाबा, क्यों है मुझे बुलाया?"
बूढ़े ने झट शीश नवाया –
"सुनो व्यथा, मेरी जल-रानी
तुम्हें सुनाऊं दर्द-कहानी,
उस बुढ़िया से कैसे निपटूं?
अक़्ल भला कैसे उसको दूं?
नहीं चाहती रहना रानी
बात नई अब मन में ठानी,
चाहे, हुक्म चले पानी पर
सागर और महासागर पर,
जल में हो उसका सिंहासन
सभी सागरों पर हो शासन,
तुम ख़ुद उसका हुक्म बजाओ
वह जो मांगे, लेकर आओ।"
स्वर्ण मीन ने दिया न उत्तर
केवल अपनी पूंछ हिलाकर,
चली गयी गहरे सागर में
और खो गयी कहीं लहर में।

बूढ़ा तट पर आस लगाये
रहा देर तक नज़र जमाये,
मीन न लौटी, वह घर आया
उसी कुटी को सम्मुख पाया,
चौखट पर बैठी थी बुढ़िया
वह भारी आफ़त की पुड़िया,
सम्मुख था वह वही कठौता
जिसका टूटा हुआ तला था।

चित्रकार : बोरीस देख़्तेर्योव
अनुवादक : मदनलाल 'मधु'

А. Пушкин
СКАЗКА О РЫБАКЕ И РЫБКЕ

A. Pushkin
THE FISHERMAN AND THE GOLDFISH
In Hindi

रादुगा प्रकाशन
मास्को

सोवियत संघ में मुद्रित

ISBN 5-05-003345-4